आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received: 15/06/2023; Accepted: 17/06/2023; Published: 24/06/2023

लेख

प्रयोजनमूलक हिंदी का भविष्य

- श्रीमती. सौम्या बी

श्रीमती. सौम्या बी, **प्रयोजनमूलक हिंदी का भविष्य**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(357-359)

प्रयोजनमूलक हिन्दी से तात्पर्य हिन्दी के उस स्वरुप से है जो विज्ञान, तकनीकी, विधि, संचार एवं अन्यान्य गतिविधियों में प्रयुक्त होती है। इसे 'कामकाजी हिन्दी' भी कहा जाता है। व्यक्ति द्वारा विभिन्न रूपों में बरती जाने वाली भाषा को भाषा-विज्ञानियों ने स्थूल रूप से सामान्य भाषा और प्रयोजनमूलक भाषा इन दो भागों में विभक्त किया है। कुछ लोग भाषा को 'बोलचाल की भाषा', 'साहित्यिक भाषा' और 'प्रयोजनमूलक भाषा' - इन तीन भागों में विभाजित करते हैं। जिस भाषा का प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए किया जाए, उसे 'प्रयोजनमूलक भाषा' कहा जाता है। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि प्रयोजन के अनुसार शब्द-चयन, वाक्य-गठन और भाषा-प्रयोग बदलता रहता है।प्रयोजनमूलक हिन्दि को अन्य नाम की दर्जा भी दिया गया है।वह है: व्यावहारिक हिन्दी, कामकाजी हिन्दी, प्रयोजनी हिन्दी, प्रयोजनपरक हिन्दी, प्रायोगिक हिन्दी, प्रयोगपरक हिन्दी।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का महत्व तथा उसकी उपयोगिता असंदिग्ध है। दरअसल, राजभाषा स्वीकार किये जाने के बाद हिन्दी के पठन-पाठन में लगे लोगों के सामने यह समस्या आयी, कि वे हिन्दी को व्यावहारिक सर्वग्राही बनाने की दिशा में यदि यत्न नहीं करेंगे तो कार्यलयीय उपयोगिता की दृष्टि से हिन्दी भाषा को समृद्ध नहीं कर पायेंगे। फलतः प्रयोजनमूलक हिन्दी के विकास के लिए अलग से प्रयत्न शुरू हुए।

प्रयोजनमूलक हिंदी का भविष्य

यद्यपि पहले भी इस दिशा में यदा-कदा प्रयास शुरू हुए, परन्तु 1960 ई.से इस प्रयास में विशेष रूप से गति आई। हिन्दी की प्रयोजनमूलकता की स्वीकृति आज के युग की महती आवश्यकता है, जिसने हिन्दी के अध्ययन के लिए एक नई दिशा प्रदान की है। फैक्टरियों, मिलों, बैकों, उद्योग, प्रतिष्ठानों, न्यायालयों तथा सरकारी, अर्द्ध-सरकारी एवं निजी कार्यालयों आदि में काम करने वाली स्त्री-पुरुषों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहन और अवसर प्रदान किये जा रहे हैं। हिन्दी के ललित एवं ज्ञानात्मक पक्ष के अध्ययन में भी प्रयोजन निहित हैं, वह पढ़े-लिखे विद्वानों की ज्ञान-पिपासा को शान्त करता है। प्रयोजनमूलकता हमें इस भाषा की शक्ति सम्पनता से परिचित कराती है, स्वभाषा के माध्यम से अपने देशवासियों से सीधे जुड़ने की प्रतिक्रिया तराशती है एवं कार्य सम्पन्नता के साथ-साथ निज भाषा के गौरव का महत्व प्रतिपादित करती है। इस लोकतांत्रिक युग में हमें किसान, मजदूर तथा कार्यालयों में काम करने वाले लिपिकों को ही नहीं अपितु अधिकारियों के लिए भी प्रयोजनमूलक हिन्दी परमावश्यक है अन्यथा वे अपने अधीन लिपिकों से तादात्म्य नहीं बिठा पायेंगे। उन्हें भी अंग्रेजी का मोह छोड़कर प्रयोजनमूलक हिन्दी की ओर आना पड़ेगा।

किसी भी भाषा का महत्व, उसकी उपयोगिता के आधार पर ही होता है। आवश्यकता पूर्ति का पत्येक माध्यम महत्वपूर्ण माना जाता है। आज हमारी हिन्दी इतनी समर्थ हो गयी है कि वह हमारे हर प्रयोजन की पूर्ति में सक्षम एवं समर्थ है। हिन्दी की शब्द-सम्पदा काफी बढ़ चुकी है, पारिभाषिक शब्दावली का पर्याप्त विकास हो चुका है। सरकार के कामकाज, संसद की कार्यवाही, विधि विधान, सरकार की नीतियाँ तथा क्रिया-कलाप की जानकारी हमें हिन्दी के माध्यम से प्राप्त होती है। अत: प्रशासन और जनता के बीच यह एक सेतु का काम कर रही है। ज्ञान-विज्ञान के समझने का साधन भी हिन्दी ही है, समाचार, मनोरंजन का महत्वपूर्ण साधन भी हिन्दी ही है, अब तो कम्प्यूटर में भी इसका प्रयोग प्रारम्भ हो चुका है। अतः आ

आज इसका भाषा क्षेत्र पर्याप्त व्यापक है। प्रशासन, परिचालन, प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान-विज्ञान का प्रयोग किये जाने वाले क्षेत्र तक इसकी पहुँच हो चुकी है। पयोजन मूलक हिन्दी की संकल्पना इसके अनुप्रयुक्त रूप की विशिष्ट भाषिक संरचना, भाषिक शब्दावली तथा सामाजिक सन्दर्भो के परिप्रेक्ष्य में जो वैज्ञानिकता प्रदान करती है प्रयोजन मूलक हिन्दी भाषा के सभी मानक रूपों को समेटे हुये होती है जिसमें अनिवार्यता, स्पष्टता, एकरूपता, सुनिश्चितता एवं औचित्य का निर्वाह किया जाता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की अपनी विशेष प्रयोजनपरक तकनीकी शब्दावली तथा पदावली होती है जो सरकारी कार्यालयों, मानविकी, तन्त्र ज्ञान, विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान तथा कम्प्यूटर आदि सभी ज्ञान एवं विभिन्न शास्त्रों की शाखाओं को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करती है। इस कारण व्यावहारिक हिन्दी की अपेक्षा प्रयोजनमूलक हिन्दी अधिक प्रयोजनार्थ तर्क संगत वैज्ञानिक तथा सार्थक मानी जा सकती है। इसमें व्याप्त अर्थवत्ता तथा मूल्यवत्ता ख्याति है। ज इसकी उपयोगिता अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की अपनी विशेष प्रयोजनपरक तकनीकी शब्दावली तथा पदावली होती है जो सरकारी कार्यालयों, मानविकी, तन्त्र ज्ञान, विज्ञान, अन्तरिक्ष विज्ञान तथा कम्प्यूटर आदि सभी ज्ञान एवं विभिन्न शास्त्रों की शाखाओं को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करती है।

****